ISSN: 2320-8708, Vol. 12 Issue 5, Sept.-Oct., 2024, Impact Factor: 8.376

गुजराती फिल्म: दशा, दिशा और संभावना

श्री हार्दिक वी. भट्ट

शोधार्थी, संगीतज्ञ तथा भारतीय सिनेमा विशेषज्ञ

भारत में हिन्दी सिनेमा की भांति ही अन्य प्रादेशिक भारतीय भाषाओं के सिनेमा का भी बहुत बड़ा इतिहास है। हर प्रादेशिक भाषा के सिनेमा का अपना महत्व है। भारतीय सिनेमा के अन्तर्गत भारत के विभिन्न भागों और भाषाओं में बनने वाली फिल्में आती हैं जिनमें हिन्दी सिनेमा (बॉलीवुड), तेलुगू सिनेमा (आंध्र प्रदेश और तेलंगाना), असमिया सिनेमा (असम), मैथिली सिनेमा (बिहार), ब्रजभाषा सिनेमा एवं भोजपुरी सिनेमा (उत्तर प्रदेश), गुजराती सिनेमा (गुजरात), हरियाणवी सिनेमा (हरियाणा), कश्मीरी सिनेमा (जम्मू एवं कश्मीर), झॉलीवुड (झारखंड), कन्नड सिनेमा (कर्नाटक), मलयालम सिनेमा (केरल), मराठी सिनेमा (महाराष्ट्र), उड़िया सिनेमा (ओडिशा), पंजाबी सिनेमा (पंजाब), राजस्थान का सिनेमा (राजस्थान), कॉलीवुड (तमिलनाडु) और बाङ्ला सिनेमा (पश्चिम बंगाल) शामिल हैं। इन्हीं प्रादेशिक भाषाओं के सिनेमा में से आज हम यहां बात करेंगे गुजराती सिनेमा की। ९ अप्रैल १९३२ को मुंबई के वेस्ट एंड सिनेमाघर में सागर मूवीटोन फिल्म कंपनी द्वारा निर्मित 'नरसिंह महेता' फिल्म रिलीज़ हुई। इस फिल्म को गुजराती भाषा की प्रथम सवाक फिल्म माना जाता है। कालक्रम की दृष्टि से यदि देखें तो, ९ जनवरी १९३२ को वेलिंगटन सिनेमाघर में रिलीज़ हुई मादन थियेटर्स फिल्म कंपनी की फिल्म 'मुंबईनी शेठाणी' यह पहेली सवाक गुजराती फिल्म होती हैं लेकिन केवल दो रील कि छोटी लंबाई वाली फिल्म होने के कारण इसे पूर्ण फीचर फिल्म नहीं माना जा सकता इसलिए 'नरसिंह महेता-१९३२' फिल्म ही गुजराती सिनेमा की पहली सवाक फिल्म है। यहां एक महत्वपूर्ण बात उभरकर सामने आती हैं कि गुजराती सवाक फिल्म अपने जन्म के साथ ही दो विभिन्न प्रकारों में विभक्त हो जाती हैं। पहले प्रकार के अंतर्गत धार्मिक रंग में रंगी हुई एवं भूतकाल की शौर्यकथाओं पर आधारित फिल्में आती हैं और दूसरे प्रकार के अंतर्गत वर्तमान विषयों से संबंधित फिल्में आती हैं। 'नरसिंह महेता-१९३२' पहले प्रकार की और 'मुंबईनी शेठाणी-१९३२' दूसरे प्रकार की फिल्म का उदाहरण हैं।

इतिहास कथाओं का युग:

आइए गुजराती फिल्मों के इतिहास पर थोड़ा दृष्टिपात करते हैं। नरसिंह महेता के बाद सन १९३२ में ही रणजीत मूवीटोन की फिल्म 'सती सावित्री' बनी। इसी अरसे में महात्मा मूलदास की कथा पर आधारित प्रकाश पिक्चर्स कंपनी की 'संसारलीला-१९३४' फिल्म बनी। सन १९४० तक सामाजिक कथा आधारित कनैयालाल मुनशी लिखित नाटक से बनी फिल्म 'बे खराब जण-१९३६', इसके अलावा घरजमाई-१९३५, स्नेहलता-१९३६, अछूत-१९३९, फांकडो फितूरी-१९३९, समाजना वांके-१९४० जैसी गिनी-चुनी फिल्में भी बनीं। इस दौर को गुजराती सिनेमा का आरंभिक एवं पवित्र दौर कहा जा सकता है। सन १९४१ से १९४५ तक गुजराती फिल्म जगत में शुन्यावकाश जैसी ही स्थिति रही थी। इन पांच वर्षों के दौरान एक भी फिल्म नहीं बनी थी। सन १९४६ में अत्यंत मधुर संगीत से

सजी, इतिहास कथा आधारित एक ऐसी फिल्म बनी थी जिसने गुजराती सिनेमा जगत में एक नई चेतना का संचार कर दिया था। यह फिल्म थी सनराइज़ पिक्चर्स कंपनी की 'राणकदेवी-१९४६'। इस फिल्म को अपार सफलता प्राप्त हुई थी। इसे गुजराती सिने जगत की प्रथम सुपर हिट फिल्म भी कहा जाता है। 'राणकदेवी-१९४६' फिल्म की सफलता के बाद गुजराती सिने जगत में अन्य ऐसे ही विषयों पर आधारित फिल्मों की जैसे श्रृंखला ही निर्माण हो गई थी। बहारवटियो-१९४७, होथल पदमणी-१९४७, भक्त सुरदास-१९४७, कृष्ण-सुदामा-१९४७, कुंवरबाईनुं मामेरुं-१९४७, मीरांबाई-१९४७ जैसी फिल्में इसका प्रमाण हैं। इतिहास कथा और पुराण कथा आधारित फिल्मों के इस दौर में गुजराती फिल्म निर्माताओं ने वर्तमान परिस्थितियों से जुड़ी हुई, सांसारिक समस्या के विषय पर आधारित कुछ फिल्में भी बनाई थीं। जैसे, जनेता-१९४७, घरवाळी-१९४८, भणेली वहु-१९४८, भाई-बहन-१९४८, भाभीनां हेत-१९४८।

सामाजिक फिल्में:

गुजराती सिनेमा जगत में सही मायनों में सामाजिक फिल्मों का दौर गोवर्धनराम त्रिपाठी के उपन्यास पर आधारित फिल्म 'गुणसुंदरी-१९४८' से शुरु होता है। इस फिल्म में पुरानी गुजराती रंगभूमि का असर भी नहीं था और टेक्निकली भी यह फिल्म काफी समृद्ध थी। इस फिल्म ने गुजराती सिने जगत में सफलता के नए ही कीर्तिमान स्थापित कर दिए थे। गुणसुंदरी फिल्म के बाद गुजराती सिनेमा जगत में करियावर-१९४८, नणंद भोजाई-१९४८, सावकी मा-१९४८, वारसदार-१९४८, वडीलोना वांके-१९४८, जीवन पलटो-१९४८, करणघेलो-१९४८, पृथ्वी वल्लभ-१९४८, वरघेली-१९४९, गोरखधंधा-१९४९, मंगळफेरा-१९४९, जवाबदारी-१९५०, गाडानो बेल-१९५०, रमताराम-१९५०, दीवादांडी-१९५०, चूड़ी चांदलो-१९५०, लग्नमंडप -१९५०, नसीबदार-१९५०, शरद पूनम -१९५० जैसी कई सफल सामाजिक फिल्में बनी थीं और गुजराती फिल्म जगत में इन फिल्मों ने बड़ी ही धूम भी मचाई थीं। सन १९५१ तक आते-आते गुजराती फिल्म का स्वर्णिम युग जैसे अस्त सा ही हो गया था। सन १९५१ एवं १९५२ में कन्यादान-१९५१, लग्नबंधन-१९५१, मंगलसूत्र-१९५१, परणेतर-१९५१, वडीलोनो वारसो-१९५१, मनुनी मासी-१९५२ जैसी केवल आठ ही फिल्में बनी थीं। कई सारे कारणों के कारण यह फिल्में निष्फल रही थीं। इन कारणों में से एक कारण था हिंदी फिल्मों द्वारा दी जाने वाली कड़ी प्रतियोगिता। साथ ही इसी दौर में गुजराती के जाने-माने अभिनेता मनहर देसाई और अभिनेत्रि निरूपमा रोय जैसे कलाकार गुजराती फिल्मों की जगह हिंदी की पौराणिक या फेंटेसी फिल्मों में काम करने लगे थे। गुजराती सिने जगत के दिग्गज संगीतकार अविनाश व्यास भी हिंदी फिल्मों में संगीत देने लगे थे। इन सभी कारणों से इस दौर में गुजराती सिने जगत में सामाजिक फिल्मों का अधोपतन शुरू होने लगा था। फलस्वरुप सन १९५३ और १९५४ में एक भी फिल्म नहीं बनी थी। सन १९६० में गुजराती फिल्मों को पुनः प्रतिष्ठा एवं लोकप्रियता दिलाने के लिए गुजराती निर्माताओं ने हिंदी फिल्म जगत के अभिनेता एवं अभिनेत्रियों का आधार लिया और गुजराती फिल्मों को लोकप्रियता प्रदान की। यही वर्ष गुजरात राज्य की स्थापना का भी वर्ष था। इसी वर्ष राजेंद्र कुमार और उषा किरण अभिनीत 'महेंदी रंग लाग्यो-१९६०' और एक नीतिवान डाकू के जीवन पर आधारित 'कादु मकराणी-१९६०' यह दो फिल्में आइ थी। अविनाश व्यास के गीत-संगीत से सजी यह दोनों फिल्में अत्यंत ही सफल रही थी। इसी समय में शहरी प्रेक्षको की रुचि भी गुजराती फिल्मों की ओर बढ़ने लगी थी। सन १९५१ से १९७० के बीच केवल पचपन ही फिल्मों का निर्माण हुआ था। संख्या

की दृष्टि से २० सालों का गुजराती सिनेमा का यह दौर काफी ठंडा रहा लेकिन इस दौर में कुछ स्तरीय एवं उत्कृष्ट फिल्में भी बनी थी। जैसे आशा पारेख के अभिनय से सजी 'अखंड सौभाग्यवती-१९६४', मनुभाई गढ़वी द्वारा निर्मित 'कसुंबीनो रंग-१९६५', संजीव कुमार अभिनीत 'कलापी-१९६६', मराठी के साने गुरुजी की विख्यात कथा 'श्यामची आई' पर से बनी फिल्म 'मोटी बा-१९६८, चुनिलाल मडिया के प्रसिद्ध उपन्यास से बनी प्रथम गुजराती रंगीन फिल्म 'लीलुड़ी धरती-१९६८', गुजरात की लोकनाट्य कला भवाई को केंद्र में रखने वाली 'बहुरूपी-१९६९' फिल्म। यह सभी फिल्में हर दृष्टि से काफी सफल एवं उत्कृष्ट फिल्में रही थीं। इन फिल्मों को कई सारे पुरस्कार भी मिले थे। सन १९७० में कांति राठौड़ द्वारा निर्मित 'कंकु-१९७०' फिल्म भी अत्याधिक विख्यात हुई थी। इस फिल्म को अंतरराष्ट्रीय ख्याति भी प्राप्त हुई थी। इसी वर्ष अन्य एक उत्कृष्ट फिल्म भी बनी थी, 'जिगर अने अमी-१९७०' जो काफी चर्चित रही थी।

दुःखद दुर्दशा का मोड:

सन १९७१ में 'जेसल तोरल' नामक फिल्म बनी थी, यह फिल्म हर दृष्टि से काफी सफल भी रही थी। लेकिन इस फिल्म के बाद गुजराती फिल्म जगत में एक ऐसे युग का प्रारंभ हुआ जिसमें कुछ गिनी-चुनी उम्दा, उत्कृष्ट फिल्मों को छोड़कर दंत कथाएं, दशा मां, वाछडादादा जैसे बिन शास्त्रोक्त देवी देवताओं, या फिर संतो महंतों की जोड़ी हुई कथाएं, अंधश्रद्धा, तंत्र-मंत्र, चमत्कार आदि विषयों को आधार बनाकर फिल्में बनने लगी थीं। इस प्रकार की फिल्मों को सामाजिक फिल्मों के अंतर्गत स्थान तो नहीं ही दिया जा सकता था, परंतु दुर्भाग्यवश इसी प्रकार की फिल्मों ने आर्थिक दृष्टि से अप्रतिम सफलता हासिल की थी जिसके फलस्वरूप लब्धप्रतिष्ठित कवि चिनु मोदी के सुपुत्र उत्पल मोदी ने अपने पिता के एक क्लासिक नाटक "जालका" पर से जब 'राजमाता' फिल्म बनाई थी तब यह फिल्म बुरी तरह पिट गई थी और उन्हें भारी आर्थिक नुकसान भी हुआ था। इसके बाद उन्होंने 'दुखड़ा हरो मां दशामा' यह फिल्म बनाई तो इस फिल्म ने अत्याधिक व्यापार किया था। इस प्रकार की घटनाओं से यह धारणा बना ली गई थी कि प्रेक्षकों को ऐसी ही फिल्में पसंद है अतः उन्हें जो चाहिए वह परोसा जाए। इस धारणा से गुजराती सिने जगत की दुर्दशा हुई और गुजराती सिनेमा जगत में फिल्में कला के लिए नहीं बल्कि केवल व्यापार के लिए ही बनने लगी थीं।

केवल प्रेक्षकों को रिझाने हेतु फिल्म निर्माण:

"जैसल तोरल-१९७१" फिल्म के बाद गुजराती सिने जगत में परिस्थितियां थोड़ी विकट हो गई थी। इस दौर में फिल्में एक वर्ग विशेष को ध्यान में रखकर ही बनाई जाने लगी थीं। गुजराती फिल्म निर्माताओं का लक्ष्य अब केवल अपने विशेष ग्रामीण प्रेक्षकवर्ग को खुश रखना और मुनाफा कमाना ही हो गया था। परिणाम स्वरूप गुजराती में लाखा लोयण-१९७५, वीर चांपराजवाळो-१९७६, खेमरो लोडण-१९७६, सोरठी सिंह-१९७६, वीर एभलवाळो-१९७६, वीर मांगड़ावाळो-१९७६, वीर रामवाळो-१९७७, जंतरवाळो जुवान-१९७८, गरवो गरासियो-१९७९, वाछड़ा दादा-१९८०, नागमती नागवाळो-१९८४, सती मदालसा-१९८४, वाली भरवाडण-१९८६, मां दशामा -१९८७, अमदावादनो रीक्षावाळो-१९९० जैसी ग्रामीण परिवेश एवं वेशभूषा आधारित कई सारी फालतू फिल्मों की झड़ी ही लग गई थीं। इस तरह की फिल्मों ने गुजराती फिल्म निर्माताओं को धनिक तो बनाया था लेकिन अच्छे, पढ़े-लिखे, बुद्धिजीवी प्रेक्षकवर्ग को गुजराती सिनेमा से विमुख भी कर दिया था। अब गुजराती में केवल दर्शकों को

खुश करने हेतु ही फिल्में बनने लगी थीं। प्रेक्षक को रिझाना एवं पैसा कमाना, यही दो गुजराती फिल्म इंडस्ट्री के जैसे केंद्र बन गए थें। परिणाम स्वरूप अच्छी कलात्मक फिल्में गुजराती में बन ही नहीं सकती ऐसी मानसिकता गुजराती प्रबुद्ध वर्ग में घर करने लगी थी। इसी मानसिकता के कारण गुजराती भाषा एवं साहित्य को भी बेहद क्षति पहुंची क्योंकि कहीं न कहीं भाषा के प्रचार-प्रसार का बहुत बड़ा माध्यम सिनेमा भी होता है। इस विकट परिस्थिति में रही सही कसर सरकारी नीति ने पूरी कर दी थी। इसी दौर में गुजराती फिल्मों को ऊपर उठाने हेतु राज्य सरकार ने गुजराती फिल्मों को संपूर्ण रूप से करमुक्त कर दिया था। इस सरकारी नीति का आशय अच्छा होने के बावजूद भी इसका बेहद दुरुपयोग हुआ था। करमुक्ति की नीति के कारण अनपढ़-गवार, बनिए, किसान हर कोई केवल मुनाफा कमाने की लालच से ही फिल्म निर्माण क्षेत्र में आने लगें थें और फिल्म कला को जाने बिना ही फिल्में बनाने लगें थें। इस प्रकार इस दौर में गुजराती फिल्म इंडस्ट्री केवल कारखाना बन के ही रह गई थी और समूचे गुजराती फिल्म जगत में जैसे अंधकार ही छाने लगा था।

उत्कृष्ट फिल्में रिवॉर्ड से वंचित रही:

यहां इस सत्य को भी नज़र अंदाज़ नहीं किया जा सकता कि अंधकार मय परिस्थितियों में भी आशा की किरण के समान कुछ प्रतिबद्ध निर्माताओं ने इसी दौर में कुछ उत्तम एवं अति सुंदर फिल्में भी बनाई थीं। जैसे उपेंद्र त्रिवेदी ने सन १९७१ में बनी जेसल तोरल फिल्म में काम करने के बाद सन १९७२ में मनुभाई पंचोली 'दर्शक' के उपन्यास पर आधारित 'ज़ेर तो पीधां छे जाणी जाणी-१९७२' जैसी क्लासिक फिल्म बनाई थी। इसी वर्ष गोविंद सरैया ने भी 'गुणसुंदरीनो घरसंसार-१९७२' जैसी अन्य एक क्लासिक फिल्म बनाई थी। इसके बाद सन १९७३ में ईश्वर पेटलीकर की 'जनमटीप' पर से भी एक उत्तम फिल्म बनी थी। लेकिन इन फिल्मों की होनी चाहिए उतनी ना तो कद्र हुई थी और नाही इसे अधिक प्रसिद्धि मिली थी, शायद इसी कारणवश इन निर्माताओं ने पुनः अन्य ऐसी क्लासिक फिल्में बनाने की हिम्मत ही नहीं दिखाई थी। इसी दौर में जहां एक और जय श्रीराम-१९७४, रणुजाना राजा रामदेव-१९७४, लाखा लोयण-१९७५, ओखा हरण-१९७५, जय रणछोड़-१९७५, बाबा रामदेव पीर-१९७६ जैसी फिल्में बनती है वहीं तनारीरी-१९७५, शेतलने कांठे-१९७५, मेनां गुर्जरी-१९७५, भवनी भवाई-१९८१, मानवीनी भवाई-१९९३ जैसी अपवाद रुप किंतु उत्कृष्ट फिल्में भी बनती हैं। इन कुछ अपवाद रुप फिल्मों का प्रेक्षकों के द्वारा जितना सम्मान होना चाहिए था उतना सम्मान तो नहीं ही हो पाया था और ना ही इन फिल्मों की आर्थिक कद्र भी हुई थी। साथ ही यह फिल्में पुरस्कारों से भी वंचित ही रह गई थी। निष्कर्ष रूप में देखा जाए तो इस दौर में जिन-जिन प्रबुद्ध गुजराती निर्माताओं ने ग्रामीण परिवेश से हटकर हिंदी फिल्मों की भांति पात्रसृष्टि का निर्माण करके हेतुलक्षी या विशुद्ध मनोरंजक फिल्में बनाने का प्रयास किए थे उन सभी प्रबुद्ध निर्माताओं के सारे ही प्रयास विफल रहें थे। क्योंकि प्रेक्षकों ने अज्ञानता वश इस प्रकार की फिल्मों को नकार दिया था। प्रेक्षकों के अलावा फिल्म मूल्यांकन समिति एवं अवार्ड देने वाली ज्यूरी ने भी इस प्रकार की फिल्मों की ओर विशेष ध्यान नहीं दिया था।

वर्तमान फिल्मों में नई दिशा और संभावना:

सन १९९८ में गोविंद भाई पटेल द्वारा निर्मित 'देश रे जोया दादा परदेस जोया' फिल्म गुजराती सिनेमा जगत की अत्याधिक सुपरहिट फिल्म साबित हुई थी। इस फिल्म ने अपार सफलता हासिल की थी। सन १९९९ में विपुल

शाह ने एक फिल्म बनाई थी 'दरियाछोरु-१९९९'। यह फिल्म बहुत ही ऑफबीट प्रेम कहानी से भरी हुई थी लेकिन इस फिल्म की हर फ्रेम में जैसे एक नवीन ताज़गी और नई ही उमंग थी। विपुल शाह की नई दिशा वाली 'दरियाछोरु' फिल्म के बाद सन २००० से २००७ तक उसी पुरानी परंपरा से युक्त गुजराती फिल्में आती रहीं थी, लेकिन सन २००८ में आशीष कक्कड़ द्वारा निर्मित 'बेटर हाफ-२००८' फिल्म ने गुजराती फिल्मों को एक नई ही दिशा की ओर अग्रसर किया। यह फिल्म नौकरीपेशा पति-पत्नी के वास्तविक जीवन पर दृष्टि डालती हुई फिल्म थी। इस फिल्म के कुछ वर्ष पहले विनोद गणात्रा ने 'हारून अरुन', 'हेडा हूडा', और 'लुक्का छुप्पी' जैसी तीन फिल्मों का निर्माण किया था। यह सभी फिल्में उन्होंने सरकारी संस्थान 'चिल्ड्रन सोसाइटी ऑफ इंडिया' के लिए बनाई थी। इनमें से 'हारून अरुन' फिल्म के लिए विनोद गणात्रा को कई अंतरराष्ट्रीय अवार्ड भी मिले थे। इसके बाद सन २०११ में युवक निर्माता नैतिश शाह की एक फिल्म आती है जिसका नाम है 'चार-१९११', आधुनिक हिंदी फिल्मों की भांति ही आधुनिक कथावस्तु वाली यह फिल्म भी काफी हद तक सफल रही थी। गुजराती फिल्मों के नवीन दिशा वाले इस दौर में सन २०१२ से तो जैसे गुजराती सिने जगत की सूरत ही बदल गई थी। सन २०१२ के बाद गुजराती फिल्म जगत सफलता के नए-नए कीर्तिमानों को पाता ही चला जा रहा था। सन २०१२ में अभिषेक जैन की बनाई हुई फिल्म 'केवी रीते जईश?' ने गुजराती फिल्मों के खोए हुए गौरव को पुनर्स्थापित कर दिया था। अपने बच्चों को विदेश भेजने हेतु माता-पिता की तीव्र ललक को विषय बनाकर सुंदर कलात्मक रूप में इस फिल्म में ढाला गया था। इस फिल्म ने गुजरात के अलावा मुंबई और विदेश के मल्टीप्लेक्सो में भी बड़ी ही धूम मचाई थी और काफी कमाई भी की थी। सन २०१३ में बनी 'सप्तपदी' फिल्म भी काफी सफल एवं चर्चित रही थी। आतंकवाद का शिकार बने हुए एक बच्चे की कहानी को लेकर चलने वाली यह फिल्म भी काफी सराही गई थी।

इसी वर्ष 'ध गुड रोड-२०१३' नामक फिल्म को भी अपार सफलता मिली थी। इस फिल्म को भारत सरकार के राष्ट्रीय पुरस्कार से भी नवाज़ा गया था तथा ऑस्कर पुरस्कार हेतु भी इस फिल्म का नाम पसंद किया गया था। सन २०१४ में बनी ऑफबीट फिल्म 'बे यार-२०१४' भी गुजराती भाषा की एक उत्कृष्ट, कलात्मक, एवं बोध युक्त फिल्म हैं। इस फिल्म का केंद्रीय विषय सच्ची मित्रता है। 'बे यार-२०१४' फिल्म के बाद गुजराती सिने जगत के अस्त हुए स्वर्णिम युग का मानो जैसे पुनः उदय हो गया। इस फिल्म के बाद गुजराती फिल्म जगत में नए-नए, वैविध्यसभर, ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजन से परिपूर्ण विषयों पर कई सारी कलात्मक, स्तरीय एवं उत्कृष्ट फिल्में बनी। जैसे कि- जो बका-२०१५, बस एक चान्स-२०१५, छेल्लो दिवस-२०१५, थई जशे!-२०१६, रॉन्ग साइड राजू-२०१६, केरी ऑन केसर-२०१७, पप्पा तमने नहीं समजाय-२०१७, लवनी भवाई-२०१७, चल मन जीतवा जईए-२०१७, ऑक्सीजन-२०१८, रेवा-२०१८, नटसम्राट-२०१८, वेंटीलेटर-२०१८, बैकबेंचर-२०१८, चाल जीवी लइए-२०१९, चासणी- मिठास जिंदगीनी-२०१९, हेल्लारो-२०१९, गोळकेरी-२०२०, डियर फाधर-२०२२, फक्त महिलाओं माटे-२०२२, मृगतृष्णा-२०२२, कच्छ एक्सप्रेस-२०२३, मीरा-२०२३, हुं अने तु- २०२३, गुलाम चोर, आदि इसी प्रकार की फिल्मों के प्रमुख उदाहरण हैं। सन २०१८ में रिलीज़ हुई फिल्म 'रेवा' साहित्यिक कृति पर से बनी फिल्म का उत्कृष्ट उदाहरण है। इस फिल्म में नर्मदा नदी के तटीय इलाकों में व्याप्त जंगलों में रहने वाले आदिवासी प्रजाति की संस्कृति तथा जीवन संघर्ष को सुंदर ढंग से प्रदर्शित किया गया है। सन २०१९ में बनी 'हेल्लारो' फिल्म को भी राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह फिल्म पुरातन विषय में नूतनता का उत्तम उदाहरण है।

नारी सशक्तिकरण एवं स्त्री विमर्श के विषय से जुड़ी हुई यह फिल्म राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी सराहनीय एवं प्रशंसनीय रही है। इसी वर्ष निर्मित अन्य एक फिल्म 'चाल जीवी लइए-२०१९' भी गुजराती फिल्म जगत को एक नई दिशा की ओर ले जाने वाली फिल्म रही है। देहदान के विषय को काफी कलात्मक एवं सार्थक ढंग से इस फिल्म के अंतर्गत उठाया गया है। गुजराती फिल्म जगत में पहली बार इस प्रकार के विषय को लेकर कोई फिल्म बनी है। सन २०२२ में अंतरराष्ट्रीय ख्याति प्राप्त फिल्म 'मृगतृष्णा' भी गुजराती फिल्म जगत को एक नई दिशा प्रदान कर रही है। बाल मानस को उजागर करती यह फिल्म अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी सराहनीय रही है। गुजराती फिल्म जगत में बालको को ध्यान में रखकर काफ़ी कम फिल्में बनी हैं। 'मृगतृष्णा-२०२२' इस दिशा में मिल के पत्थर सामान साबित होगी। इसी वर्ष आधुनिक युग में पिता पुत्र के सूक्ष्म एवं नाज़ुक के संबंधों के ताने-बाने को बुनती हुई अन्य एक फिल्म 'डियर फाधर-२०२२' भी काफी नए कलेवर को लेकर चलने वाली चर्चित फिल्म रही है। सन २०२३ में बनी फिल्मों में से 'कच्छ एक्सप्रेस' और 'मीरा' काफी सराहनीय फिल्में रही। 'मीरा' फिल्म पितृसत्तात्मक प्रथाओं से ग्रसित गांव की उस लड़की की कहानी है जो इन तमाम संघर्षों और चुनौतियों का दटकर सामना करते हुए सफलता और आत्मनिर्भरता का एक शक्तिशाली प्रतीक बनकर उभरती है। महिला सशक्तिकरण और आत्मनिर्भरता के विषय को उजागर करती यह फिल्म भी गुजराती फिल्म जगत को एक नई दिशा की और ले जाते हुए दिखाई देती है। इस तरह आज गुजराती फिल्म जगत में नई-नई दिशाओं और संभावनाओं के कई सारे द्वार खुल गए हैं।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में गुजराती सिनेमा का इतिहास काफी बृहद एवं उतार-चढ़ाव से भरा हुआ रहा है। आंकड़ों की दृष्टि से देखे तो सन १९३२ से १९९४ तक कुल मिलाकर ५७९ फिल्मों का निर्माण हुआ हैं। उसके बाद सन १९९५ से २०१४ तक ६१९ फिल्मों का निर्माण हुआ हैं। यूं देखा जाए तो सन २०१४ के अंत तक कुल मिलाकर ११९८ गुजराती फिल्में बनी हैं। सन २०२३ तक आते-आते यह फिल्मों की संख्या बढ़कर **१५५३** होती हैं। गुजराती सवाक फिल्मों की **९१** वर्षीय लंबी यात्रा में कई सारे सुखद एवं दु:खद मोड़ आते रहे हैं। इन **९१** वर्षों में गुजराती सिनेमा ने भारतीय सिनेमा को कई सारी हेतुलक्षी, सराहनीय, उत्कृष्ट एवं विशुद्ध मनोरंजक फिल्में दी हैं। दशा की दृष्टि से देखा जाए तो गुजराती सिने जगत के प्रारंभिक काल एवं मध्यकाल के शुरुआती दौर में अत्यंत ही विशुद्ध मनोरंजक, कलात्मक तथा उत्कृष्ट सामाजिक एवं कुछ-कुछ धार्मिक फिल्में बनती रही थीं। उसके बाद गुजराती सिने जगत के मध्यकाल में २० वर्षो का ऐसा भी दौर रहा हैं जहां केवल व्यापार और मुनाफे हेतु ही फिल्में बनती रही हैं। दिशा की दृष्टि से भी देखा जाए तो गुजराती सिने जगत में काफी सारे बदलाव आते रहे हैं। लेकिन आधुनिक गुजराती सिनेमा में जो नई दिशा का प्रादुर्भाव हुआ है वह गुजराती सिने जगत के लिए वरदान समान है। संक्षिप्त में कहे तो आज गुजराती सिनेमा का भारतीय सिने जगत में एक अलग ही गरिमामय एवं महत्वपूर्ण स्थान है। गुजराती सिनेमा का जिक्र किए बिना भारतीय सिनेमा की बात, की ही नहीं जा सकती है। आज गुजराती सिने जगत में संभावनाओं से भरपूर कई सारी नवीन दिशाएं खुली हुई है। गुजराती फिल्म इंडस्ट्री में आज गुजरातीओं के अलावा अन्य प्रादेशिक भाषाओं के निर्माता-निर्देशक, अभिनेता अभिनेत्री आदि भी गुजराती फिल्म इंडस्ट्री की ओर मुड़े हैं और इस इंडस्ट्री को नए-नए मुकामों पर भी पहुंचा रहे हैं। यही इस बात का प्रमाण है

कि आज गुजराती फिल्म जगत में बहुत सी नई-नई संभावनाएं उपलब्ध हैं जो इस इंडस्ट्री को और भी अधिक सफल एवं समृद्ध बना रही हैं।

संदर्भ सूची

[1]. गुजराती फिल्म गीत कोश १९३२ से १९९४- (लेखक: हरीश रघुवंशी, प्रकाशक: हरीश रघुवंशी, सगरामपरा, सूरत. (प्रकाशन वर्ष: १९९५) (भाषा गुजराती)

[2]. भारतीय फिल्मना ७५ वर्ष- परिचय पुस्तिका क्र.३२० (लेखक: फिरोज़ रंगूनवाला, प्रकाशक: परिचय ट्रस्ट, महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग, चर्नी रोड, मुंबई.) (भाषा गुजराती)

[3]. गुजराती फिल्मना पांच दायका- परिचय पुस्तिका क्र.५३३ (लेखक: विठ्ठल पंड्या, प्रकाशक: परिचय ट्रस्ट, महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग, चर्नी रोड, मुंबई.) (भाषा गुजराती)

[4]. भारतीय सिनेमाना १०० वर्ष- परिचय पुस्तिका क्र.९०६ (लेखक: वीरचंद धरमशी, प्रकाशक: परिचय ट्रस्ट, महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग, चर्नी रोड, मुंबई.) (भाषा गुजराती)

[5]. सिनेगुर्जरी एक झलक- परिचय पुस्तिका क्र.१२८५ (लेखक: जयंत पीठडिया, प्रकाशक: परिचय ट्रस्ट, महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग, चर्नी रोड, मुंबई.) (भाषा गुजराती)

[6]. Encyclopedia of Indian Cinema- (Writer: Ashish Rajadhyaksha & Paul Willemen, Publication: Oxford University Press, Jai Singh Road, Post Box 43, New Delhi)

पत्र-पत्रिकाएं

[1]. DNA (Article – “Gujarati Cinema a Battle for Relevance”, D: 16th December 2012.) (English Newspaper-Mumbai)

[2]. Times of India (Article – “Gujarati Films to Hit a Century This Year”, D: 22th June 2016.) (English Newspaper-Mumbai)

[3]. साधना: गुजराती सिनेजगत विशेषांक (गुजराती साप्ताहिक पत्रिका- अहमदाबाद. दिनांक - २ मई २०१५.)४. 'सीने गुजराती' दीपोत्सवी सिनेमा विशेषांक (गुजराती E-पत्रिका. दिनांक - १३ नवंबर २०२३.)